डॉ०शैलेंद्र मोहन मिश्र
सी० एम० जे० कॉलेज
दोनवारी हाट, खुटौना

आसामक मैथिली नाटक (अंकिया नाट)

अंकिया नाट क स्वरूप :-

मिथिलांचल सँ दूर भारतक पूर्वोत्तर प्रदेशमे जाहि नाटकक विकास भेल ओहि नाटकक नामकरण विद्वान लोकनि अंकिया नाट कएल ।

डॉ० विरंचि कुमार बरुआ अंकिया नाटक संदर्भ मे लिखैत छथि - " जे यद्यपि आसाम मध्य शंकरदेव तथा अन्यान्य वैष्णव द्वारा रचित नाटक अंकिया नाट नामे अभिहित अछि तथापि एकरा संस्कृतक ' अंक ' प्रचारक नाटक सँ कोनो संबंध नहि अछि । प्रायः अंकिया ' आंगिक ' शब्दक भ्रष्ट रूप अछि जे आंगिक अभिनय सँ संबंधित अछि । एहि नाटक कें अंक विभाजन सँ कोनो मतलब नहि अछि । "

अंकिया नाट एकांकी नाट थिक जाहिमे पृथक - पृथक दृश्य योजनाक सेहो अवकाश नहि छलैक , अर्थात अंकिया नाट क संपूर्ण एके बेर होइत छल । वैष्णव धर्मक प्रचारार्थ लिखित आंगिक अभिनय सँ परिपूर्ण एकांकी नाटक थिक , आसामक अंकिया नाट। 16म शताब्दी मे वैष्णव धर्मक प्रचारार्थ अंकिया नाट क रचना कएल गेल एहि प्रकारक नाटकक कथावस्तु मुख्यतः विष्णुक अवतार कृष्ण , राम व शिवक जीवन पर आधारित अछि । भागवत ओ हरिवंश सँ एहि कथा सभ कें मुख्य रूपसँ लेल जाइत छल ।

अंकिया नाट क आदि रचयिता भेलाह शंकरदेव जे वैष्णव धर्मक सभसँ प्रमुख संतक रूपमे प्रख्यात छथि । अंकिया नाट क रचना सँ पूर्व हिनक नाटकीय प्रदर्शन भेल चिह्न यात्राक नाम सँ । चिह्न यात्रा सँ तात्पर्य भेल चित्रित पट सँ युक्त रंगमंच पर यात्रा रितिक अभिनय जे 15म शताब्दी मे होइत छल । चिह्न यात्रा पश्चात अंकिया नाट क रूपमे यथोचित संगीत , नृत्य ओ कथोपकथन सँ युक्त भए विकसित भेल । अंकिया नाट सँ पूर्व आसाम मे काव्य ओ शास्त्रक जन सामान्य मे सस्वर पाठक परिपाटी छल । एहि प्रकारक काव्यक शंकरदेव स्वयं सेहो आसामी भाषा मे रचना कएने छलाह । किन्तु पश्चात नाटक कें वैष्णव धर्मक प्रचारक अपेक्षाकृत अधिक प्रभावपूर्ण साधन बुझि अपनाओल।

अंकिया नाट क रचना सँ पूर्व शंकरदेव बारह वर्ष धरि देशक विभिन्न भाग मे यात्रा कएने छलाह , जाहि क्रममे ओ मिथिला सेहो आएल छलाह एवं एहि ठाम अभिनित होइत नाटक देखि पूर्ण प्रभावित भेल छलाह । ओहि समय मे प्रचलित अन्य नाटक यथा - रामलीला , रासलीला , यात्रा , कथक , यक्ष गान , भागवत आदिसँ तत्व ग्रहण कए स्वतंत्र अंकिया नाट क स्थापना कएलनि । आसाम मध्य सेहो कतेको प्रकारक अभिनय नृत्य प्रणाली प्रचलित छलैक यथा देवधानी नाच एवं ओजा पाली । एहि मध्य ओजापाली बड़ प्रसिद्ध छलैक । ओजा , ओझा वा झाक असमी उच्चारण थिक । मिथिलाक ब्राह्मण मंडली ओहि ठाम जाहि प्रकारक नाचक अभिनय करैत छलाह , सएह भेल ओजापाली ।

आसाम मे मैथिली भाषाक प्रचार ओ प्रसार तथा मैथिली मे नाटक रचनाक पाछाँ विद्यापतिक गीत सँ आसामक कवि पूर्ण प्रभावित भेलाह तथा हुनक गीतक भाषा सेहो वैष्णव भजनक लेल उपयुक्त बुझल गेल । तैं शीघ्रे चारु दिससँ विद्वान सभ हुनका पाछाँ दौड़लाह । नेपाली तथा तिब्बती विद्वान लोकनि सेहो छलाह , कामरूपक विद्वान सेहो नहि पछुएलाह । अनेको साहित्यिक ओ ऐतिहासिक प्रमाण सँ ई बात पुष्ट होइत अछि जे कामरूप सँ विद्वान लोकनि मिथिला अएलाह तथा मैथिली भाषा सिखलनि ।

आसाम मध्य मैथिली भाषा मे रचना कयनिहार वैष्णव भक्त लोकनि वैष्णव धर्मक प्रचार करबाक मुख्य उद्देश्ये जन साधारण कें प्रभावित करबाक हेतु दृश्य काव्य नाटक कें सफल माध्यम बनओलन्हि । परम वैष्णव शंकरदेव अपन भ्रमणक क्रममे जखन मिथिला अएलाह तखन ओ मिथिलाक नाट्य प्रणाली सँ प्रभावित भेलाह। नाटकक माध्यमे धर्म प्रचार सुलभ जानि ओ मैथिली नाटकक रचना कएल आओर ई परम्परा किछु दिन धरि ओतहु चलैत रहल ।

अंकिया नाट क वैशिष्ट्य :-

अंकिया नाटक संम्पूर्ण कथावस्तु पौराणिक रहैत छल । रामायण , महाभारत , वैष्णव पुराणक कथावस्तु लए एहि नाट सभक रचना भेल अछि । विशेषतः श्री कृष्ण लीलाक वर्णन अछि । एहि नाट मे पात्रक संख्या बड़ सीमित रहैत अछि । नायक - नायिकाक चरित्र चित्रण पर विशेष ध्यान देल जाइत अछि एवं अन्य पात्रक महत्त्व बड़ गौण रहैछ ।

मध्यकालीन मैथिली नाटक मध्य संस्कृत - प्राकृत मैथिली त्रिभाषाक साधारणतः प्रयोग भेल अछि, परन्तु अंकिया नाट मे संस्कृत ओ मैथिली द्विभाषाक प्रयोग अछि । एहू मे आरंम्भ मे संस्कृतक अधिक प्रयोग अछि जे कालक्रमे कम होइत गेल अछि ।

संस्कृत नाटकक रीतिक अनुकूल एहि नाटकमे मुख्य रूपसँ संस्कृत श्लोक , नांदीपाठ , सूत्रधारक प्रवेश तथा पूर्वरंगक सामान्य व्यवहार पालनक दृष्टिएँ देखबा मे अबैत अछि । संस्कृत नाटकमे सूत्रधारक;पूर्वरंगक पश्चात कोनो प्रयोजन नहि रहैत छैक । परन्तु अंकिया नाट मे सूत्रधारे रंगमंच पर अद्यान्त उपस्थित भए सभ किछु बनल रहैत छल अभिनेता ओ व्याख्याता । ओ समय - समय पर पात्रक प्रवेशक सूचना दैत अछि तथा पात्र द्वारा पठित श्लोकक व्याख्या करैत अछि । ओ कथाक विच्छिन्न रूपकें जोड़बाक प्रयास करैत अछि तथा दृश्य परिवर्तनक सूचना दैत रहैत छथि ।

बिभिन्न रागमे विरचित गीत सँ संम्पूर्ण नाटक भरल अछि तथा संगीतक प्रधानता अछि । नाटकक कथोपकथन मे मैथिली गद्यक प्रयोग अछि तथा गीतमे वर्णित विषयक व्याख्या गद्यमे भेल अछि । सूत्रधार रंगमंच पर गद्यमे विषयक परिचय दैत अछि तथा नाटकीय कथाक विकास कें गद्यक माध्यमे अविच्छिन्न करैत अछि ओ दृश्यक बोध करबैत अछि ।

एहि नाटकमे अंकक योजना साधारणतः नहि अछि , संगहि प्रवेशक , विषकुम्भक , भरत वाक्य आदिक विधान सेहो नहि अछि । एके अंकमे संम्पूर्ण नाटक संपन्न होइत अछि । साधारण समाज मे वैष्णव धर्मक तथा कृष्ण भक्तिक प्रसार करब एहि नाटकक विशेषता थिक । वैष्णव धर्मक प्रचार हो , तथा एहि सँ दर्शकक हृदय मे धार्मिक भावना ओ श्रद्धाक उदय हो ।

एहि प्रकारें अंकिया। नाट मे मैथिली नाटकक विलक्षण स्वरूपक दर्शन होइत अछि । की अभिनयक नवीनताक दृष्टिएँ , की धार्मिक , दार्शनिक , ओ साहित्यिक विलक्षणताक दृष्टिएँ , ओ कि भाषाक प्रयोगक दृष्टिएँ ई मैथिली साहित्यक अभिन्न अंग थिक। असमी भाषा सँ मिश्रित भेलहुँ संता एकर भाषा मे भावाभिव्यक्ति मे मैथिली भाषाक स्वर मुखर अछि ।